



# श्रीमती जेठीवाई का जीवन परिचय



श्रीमती जेठीवाई जी का जन्म लगभग ६५ वर्ष पूर्व देस नोक (बीकानेर) के एक सम्पन्न प्रहस्थ श्री जीवनलालजी सुराणा के यहां हुआ। देसनोक बीकानेर के राजाओं की कुलदेवी श्री करणी माता के मन्दिर के कारण बहुत विख्यात है। आप का सम्बन्ध मुलतान निवासी सेठ नधमलजी सेठी से हुआ।

इनके पिता श्री श्वेताम्बर तेरापथी धाम्नाथ को मानने वाले थे। परन्तु इन पर श्वेताम्बर मूर्तिपूजक मिद्धान्तों का ऐसा रग बढ़ा जो उत्तरीत्तर बढ़ता ही गया।

आपका स्वभाव सरल कोमल तथा मधुरता से भरा हुआ है। मुलतान का एक एक जैन बच्चा बूढ़ा तथा स्त्री पुरुष आपके स्वभाव को पसन्द करता है। अतिथि सत्कार में आपको खास तौर आनन्द अनुभव होता है। मुलतान में कोई दिन ऐसा नाली नहीं जाता या जब कि एक दो अतिथि इनके घर पर न आयें। पाँच सात भादमी की रसोई सदा ब्यादा बनाने का इनका नियम रहा है।

धर्म की तरफ इनकी अभिरूचि प्रारम्भ से ही रही है । सामायिक, प्रतिक्लमण, जप, तप, स्वाध्याय, देवदर्शन आदि क्रियाएँ करने का नित्य का नियम है ।

आप तमाम जीवन पतिसेवा में लीन रही हैं । आपने पतिव्रत धर्म इस ग्भूवी से निभाया है । कि इस युग में बहुत कम स्त्रियाँ निभा सकती हैं । सेठ भी नधमलजा शिवपुरी आने के पश्चात् वर्षा तक बीमार रहे । आपने उनकी सेवा तन मन से की और रात दिन सब काम का भ छोड़कर उनकी सेवा में लगा रही ।

आप पिछले एक वर्ष से रुग्ण शय्या पर हैं । परन्तु धर्म का आर हृदय ध्यान होता जा रहा है । ममार की असारता सदा उनके सन्मुख रहती है । अपनी दीर्घ बीमारी को लज में रक्ते हुवे और शरीर को क्षण भंगुर समझ कर उन्होंने अपन हाथ से लगभग ६००) नौ सौ रुपये के दान की रकम अपनी पुत्रियों तथा धार्मिक सस्थाओं तथा ज्ञान वृद्धि के लिए निकाली है । और यह पुस्तक उन्हीं की आर्थिक सहायता से प्रकट हो रही है । आशा है पाठकगण इस पुस्तक से लाभ उठाकर उनकी भावना को सफल करेंगे ।

—सुदामीपति जैन की० ८०



स्व० सेठ नथमलजी सेठी की धर्मपत्नी



श्रीमती जेठीबाई



॥ अर्हं नमः ॥

# ॐ श्री अक्षय निधि ॐ

❀ तपो विधि ❀

—: गाथा —

नेवमि त्रिभ्य कलमो, जो पुण्यो अक्षय्याण मुद्धिय ।  
जो तत्त्य सत्त सरिसो, तपो तमकक्षयनिहिं विति ॥ ५६७ ॥  
( प्रवचन पारोदार )

अर्थ—श्री जिनेश्वर देव के सामने कृमि स्थापन कर उसे अक्षता—  
चाबनों की मुट्ठी से प्रत्येक दिन भरना चाहिये । जितने दिनों में वह मरा  
जाय उतने दिनों तक शक्ति अनुष्ठार जा तप किया जाता है, उस तप को  
गुरु लोक "अक्षय निधि"—तप कहते हैं ।

## गुरु-परपरा विधि

अक्षय निधि—तप नामानुरूप गुणों को धारण करता  
है । इस तप को करने वाले भव्यात्मा द्रव्य-भाव दोनों प्रकार  
से इस लोक में और परलोक में अखूट स्वप्नाने के स्वामी हो  
जाते हैं ।

इस तप का प्रारंभ पर्वोद्विराज पर्यपण की सवत्सरी से  
पूर्व पन्द्रहवें दिन में करना चाहिये । पवित्र वायुमण्डल वाले  
विशाल स्थान में पहिले चौमा देकर समवसरण का त्रिगुहा  
स्थापन कर, सिंहासन पर श्री जिनेश्वर भगवान की प्रतिमा

विगजमान करनी चाहिये । भगवान के सामने सायिया-  
गह्वेली कर, उस पर उत्तम धातु का या मिट्टी का कुम्भ स्थापन  
करना चाहिये । सुगन्धी फूलों से और फूलों की मालाओं  
से कुम्भ की पूजा करनी चाहिये । उसमें सोना चांदी मणि  
मोती आदि के साथ लोंग सुगरो इतायची आदि डालकर  
अक्षतों-चापलों की एक २ पमली धोया सोलह दिन तक  
तीन प्रदक्षिणा देते हुए कुम्भ भर जाय इस तरह से डालनी  
चाहिये । उस अक्षयनिधि कुम्भ के सामने अखण्ड दीप  
रखना चाहिये । धूप रोना चाहिये । नैवेद्य घरना चाहिये ।  
हमेशा बेगार बदन से पूजा करनी चाहिये । अक्षतों की  
पसली डाले बाद कुम्भ के मुख पर श्रीफल घर कर कगन  
दोरडा वाली मौनी से पीला या हरा-लाल रेशमी वस्त्र बाधना  
चाहिये । ऊपर चढ़वा बाधना चाहिये । बाजोठ पर श्री कल्प  
सूत्र की पूजा कर, स्थापन करना चाहिये । वास क्षेत्र से फूलों  
से ज्ञान पूजा करनी चाहिये ।

इस प्रकार सोलह दिन तक श्री अक्षयनिधि कुम्भ और  
भगवान के सामने हमेशा दोनों समय प्रतिग्रमण करना  
चाहिये । देव बदन करना चाहिये । अपने हाथ से उम  
स्थान की प्रमार्जना करनी चाहिये । माय—प्रात भगल गीत  
गाये जाने चाहिये । संसारी कामों से दूर रहना चाहिये ।

ॐ हाँ ऐं नमो नाणस्म

इस महा मन्त्र का जाप मौन पूर्वक हर समय करते  
रहना चाहिये । कम से कम बधी हुई २० नयकार वाली  
जपनी चाहिये । माथिये एकावन करने चाहिये । ज्ञान तप के  
एकान्त खमासमण देना चाहिये । पूजा प्रभावना यथा शक्ति

करनी चाहिये । ब्रह्मचर्य पूर्णतया रखना चाहिये । १५ दिन तक एकाग्रता करना चाहिये । मंत्र सरो का अन्तिम सोलहवा उपवास करना चाहिये । अन्तिम दिन रात्रि जागरण करना चाहिये ।

पूर्णाहुति — पारणे के दिन अक्षयनिधि-कुम्भ को ताजे सुगन्धी फूलों की माला से सजाकर, सौभाग्यवती स्त्रियों के साथ धरना चाहिये । मंत्र ज्ञान के नैवेद्य लड्डू-पेड़े-घरफी घेवर आदि के पाच थाल भरने चाहिये । मेर-संतर-केले-अमूर आदि फलों के पाच थाल भरने चाहिये, इनको भी सजा कर सौभाग्यवती स्त्रियों के साथ छटाना चाहिये । बड़ी घूम-धाम से हाथी घाड़ नगर निशान के साथ जुबूम निकाल कर शहर में घूम कर मन्दिरी में जाना चाहिये । तीन प्रदक्षिणा दक्षिण कुम्भ नैवेद्य के और पत्र के थाल श्री भगवान के सामने धरना चाहिये और चैत्यपूजन विधि करनी चाहिये । ज्ञान का पुस्तक उसी जलम के साथ उपास्य में जाकर श्री गुरु महाराज को अर्पित करना चाहिये । यहा गूँली कर मोना रूपा नाणा से ज्ञान पूजा करनी चाहिये । गुरु यत्न विधि करनी चाहिये । श्रीगुरु महाराज से मंगलिक सुन विमर्जन करना चाहिये । चित्तने तप करने वाले हों उनसे कुम्भ होने चाहिये । यह तप गृहस्थ-आसकी को करने का है । जघन्य मध्यम और उत्कृष्ट एक वर्ष दो वर्ष और तीन वर्ष यह तप होता है । श्रुत देवी की आराधना चौथे वर्ष में होती है । द्रव्य भाव भक्ति पूर्वक यथा शक्ति—इस तप के करने से भक्त्या त्माओं को—अक्षयनिधि-ज्ञान धन की प्राप्ति इस लोक और परलोक में होती है । त्याग भावना से तपश्चर्या आदि से आत्म शुद्धि हो आत्मा परमात्मा बन जाता है ।



## श्री अक्षयनिधि-जिन-चैत्यवन्दन

[ १ ]

ॐ अहं पद आत्मता, परमात्म पद धार ।  
 गुण अनंत अक्षयनिधि, अक्षयनिधि दातार ॥१॥  
 उत्पाद व्यय ध्रुव गुणी, लोका लोक-अनंत ।  
 सत्तत्पारथ — देशना, फरमावें अरिहंत ॥२॥  
 जाने देखें ज्ञान से, ज्ञानो ज्ञान महान ।  
 योगाचक भाव से, साधन मिद्धि निदान ॥३॥  
 दान शील तप भाव ये, भेद धरम के चार ।  
 सेवा सुख सेवा मिले, अहं पद अवतार ॥४॥  
 सुख सागर भगवान् जिन, हरि पूज्येश्वर भाव ।  
 अक्षयनिधि विधि नितनर्म, बोध बुद्धिगुणदाव ॥५॥

[ २ ]

अक्षयनिधि अरिहंत पद, आत्म गुण आधार ।  
 अक्षयनिधि तप सुवती, वन्दू बारवार ॥१॥  
 तीर्थंकर तीर्थपति, जगजन — तारणहार ।  
 समवसरण भाषे प्रभु, तप विधि वर विस्तार ॥२॥  
 अन्तराध-घाती करम, अंत करण हित सार ।  
 अक्षयनिधि तप साधना, साधक सुखदातार ॥३॥  
 आत्म का गुण ज्ञान है, पुरपारथ परधान ।

शानी के मनसंग म, प्रकृष्टे ज्ञान महान ॥४॥  
 मुख मागर भगवान त्रिन, हरिपूजित अरतार ।  
 पोष पुद्धि द्विष हेतु से, बन्दु बार हजार ॥५॥

[ ३ ]

( हरिगीतिका ६ )

पर द्रव्य ममता भार तत्र निज भार अनुरागी हुए,  
 जो जीव के कन्यापदामी मुक्ति पथ पागी हुए ।  
 गुरुपार्थ पावन साधना बल कर्म मन दर्ता हुए,  
 हो बन्दना मेरी उन्हें जो तीर्थ के कर्ता हुए ॥१॥  
 अतिगय अनंत सुधामधुर वाणी मुना मय लोकर को,  
 उपदेश दे मत्तत्र का फँला दिया आलोक को ।  
 अक्षयनिधि प्रभु ज्ञान घन भवि जीव उद्धर्ता हुए,  
 हो बन्दना मेरी उन्हें जो तीर्थ के कर्ता हुए ॥२॥  
 निज घोर तप से विध को तप त्याग के आदर्श से,  
 परिचित किया प्रेरित किया निज आत्म के उत्कर्ष से ।  
 अक्षयनिधि तप योग से हरि पूज्य जग भर्ता हुए,  
 हो बन्दना मेरी उन्हें जो तीर्थ के कर्ता हुए ॥३॥

[ ४ ]

वर्तमान शामन—पति, वर्द्धमान—भगवान ।  
 अर्थ—रूप उपदेश दें, करें जगत कन्यायान ॥१॥

सूत्र रूप गूये गुणी श्री गणेश्वर महाराज ।  
 अविर्मन्त्री शास्त्र ये, प्रवचन पुण्य जडान ॥२॥  
 प्रवचन-सारोद्धार म, बहुविध तप अधिहार ।  
 अक्षयनिधि तप साधना, सायन जन सुखकार ॥३॥  
 अक्षयनिधि श्रुत ज्ञान से, प्रमटे आत्म-ज्ञान ।  
 आत्म-ज्ञानी आत्मा, सुखसागर भगवान ॥४॥  
 जिनहृदि पूज्य मदा नम्, अक्षयनिधि तपवार ।  
 परमात्म पद उदना, वरु मिटे भय भार ॥५॥

[ ५ ]

( यमंततिलका छ ५ )

आत्मैक-बुद्धि-विधि-रोध-विधान-दर्शन,  
 स्फूर्जत्समाधि-शुभ-योगभृता समन्तम् ।  
 प्रीड-प्रताप-जित-मोह-महारिपक्ष,  
 पुण्यात्म-पुण्य-परिवर्द्धन-भाय-पक्षम् ॥१॥  
 अहं रहो-रहित-मर्चन-योग्य-भाय,  
 बाह्यान्तरारि-विजयाप्त-महा-प्रभायम् ।  
 तीर्थोधिराजमिह सत्सहज — स्वभाय,  
 सर्वात्मनापि तममा क्लयक्षमायम् ॥२॥  
 कर्मान्तंरारि-पदवीं परमा दधान,  
 मिद्धि सदाऽक्षयनिधि सुरमा ददानम् ।

दीव्यन्महोभर महोज्ज्वलता—विधान,  
वन्दे तपो—विधि—मना विभु—वर्द्धमानम् ॥३॥

[ इति अक्षयनिधि तप चैत्यपठन— ५ ]

### अक्षयनिधि तप स्तवन—१

(तर्ज—श्रीरुभव जिनराजनी ने तादृक अक्षय स्वरूप विनयर पृपो०)

मिद्वबुद्ध भव पारगा रे, परमात्म—पद धार ।  
आत्म वन्दो रे ।

महावीर मङ्गलमयी रे, अक्षयनिधि अवतार ।  
आत्म वन्दो रे ।

वन्दो वन्दो रे विनय विधि भाव, आत्म वन्दो रे ॥१॥  
तान काल तिहु लोफ मे रे, मानी भाव अणेष । अन्तः २  
ज्ञान गुणे नरी देखता रे, प्रभु सामान्य विणेष ।

आत्म वन्दो रे, वन्दो वन्दो रे ॥२॥

निराकार सामान्य से रे, वर विशेष सादर ॥ अन्तः २ ०  
जाने देखे द्रव्य के रे, गुण पर्याय द्रव्य

आत्म वन्दो रे, वन्दो वन्दो रे ॥३॥

ज्ञान दर्शन उपयोग मे रे, प्रभु परिणति ॥ अन्तः २ ०  
भेदा—भेद विचार मे रे, क्रम—भावे ॥ अन्तः ३

आत्म वन्दो रे, वन्दो वन्दो रे ॥४॥

आत्म का गुण ज्ञान है रे, ज्ञान सकल गुणधार ।आत्म०  
कर्मावरण निहीनता रे, शक्ति व्यक्ति अविहार ।

आत्म बन्दो रे, बन्दो बन्दो रे० ॥५॥

कर्मों से ससार है रे, कर्मों से भवभार ।आत्म०  
कर्म रहित होने प्रभु रे, मयात्म आधार ।

आत्म बढो रे, बन्दो बढो रे ॥६॥

श्री प्रभु पद अवलम्बने रे, गुण अक्षयनिधि भार ।आत्म०  
प्रकटे विघटे विश्र में रे, कर्म जनित दुख दाव ।

आत्म उदो रे, बढो बढो रे० ॥७॥

अक्षयनिधि गुण साधना रे, अक्षयनिधि तप धार ।आत्म०  
अक्षयनिधि अरिहत का रे, पट पावे निरधार ।

आत्म बढो रे, बढो बढो रे० ॥८॥

पर्वराज पर्यूपणा रे, पावे पृथ्व सयोग ।आत्म०  
द्रव्य क्षेत्र अरु काल की रे, भार शुद्धि सुख भोग ।

आत्म बढो रे, बढो बढो रे० ॥९॥

अक्षयनिधि विधि साधनारे, आराधक अवधान ।आत्म०  
आत्म परमात्म बने रे, सुग-सागर मगवान ।

आत्म बढो रे, बढो बढो रे ॥१०॥

चिनहरि-पूज्येश्वर प्रभु रे, सन्मति श्री महावीर ।आत्म०  
गुण कवीन्द्र गाया करो रे, मानो धन तकदीर ।

आत्म बढो रे, बढो बढो रे० ॥११॥

## अक्षयनिधि—विधि स्तवन—२

( तर्प-मीना माना की गोदी में दण्डमत डारी मुदडी )

- सुखकर ममवशरण म शासन—स्वामी देवें देशना ।  
 अमृत पदवी पावें भवि सुन, अमृत अधिनी दशना ॥टेर  
 आत्म र्चा कर्म विधान, मय मे भटके दृ स प्रवान ।  
 धर्मारधन से सुख पावे, स्वामी देवें देशना ॥सु० १॥  
 दानादिक हैं चउविध धर्म, तप-पद माटे म्नुपित र्म ।  
 आत्म स्वभाव मुनिर्मल होये, स्वामी देवें देशना ॥सु०२॥  
 आगम में तप विविध प्रशर, अक्षयनिधि तप मुय मडार  
 आराधक अक्षयनिधि पावें स्वामी देवें देशना ॥सु० ३॥  
 पर्यूपण सत्त्वर परे, पनरह दिन पहिले हो अगरे ।  
 अक्षयनिधि विधि सा रक माधें, स्वामी देवें देशना ॥सु०४॥  
 स्वस्तिज्ञान की पूजा करना, मगल घट अक्षत से भग्ना ।  
 भक्ति द्रव्य-भाच चित धरना, स्वामी देवें देशना ॥सु० ५॥  
 आवश्यक प्रति दिन मुखारा, पालो ब्रह्मचर्य अरिमार ।  
 आत्म परमानम लपलाना, स्वामी देवें देशना ॥सु० ६॥  
 सुगमित घूष दशाग उदारा, दीपक ज्योति अक्षडित धारा ।  
 सुरमित ज्योतिर्मय जीवन हो, स्वामी देवें देशना ॥सु०७॥  
 चाढा विरसित मुन्दर फूल, चाढो सुमपुर फन बहुमल ।  
 विकमित मुमधुर जीवन होये, स्वामी देवें देशना ॥सु०८॥

पूजा प्रभावना इरुचित्त, करना देव वंदन भी नित ।  
 हरना पाप-ताप समाग, स्वामी देवें देगना ॥ सु० ६ ॥  
 ध्याये निज आतम गुण ज्ञान, उत्सव हय गय रथ मडान ।  
 वाजे गाजे प्रभु का मैटो स्वामी देवें देगना ॥ सु० १० ॥  
 अक्षयनिधि तप एकामन से, पूरण करना तन-मन धन से ।  
 गावें जिन हरि जय जय जारा, स्वामी देवें देगना ॥ सु० ११ ॥

### अक्षयनिधि तप स्तवन्— ३

( तर्ज—“ओ पछी वापरिया” )

परमातम गुण गावो, तपस्वी तन मन से ।  
 आतम मे लय लाथो, तपस्वी तन मन से ॥ टेर ।  
 अक्षयनिधि तप इच्छा रीधन,  
 करने से हो आतम शोधन,  
 कर्मों को दूर भगाओ, तपस्वी तन मन से ॥ पर० १ ॥  
 जघन्य मध्यम यह उच्छ्रा,  
 इरु दो हीन वरम मे पुष्टा,  
 निज गुण ज्ञान उपायो, तपस्वी तन मन से ॥ पर० २ ॥  
 श्रुत देरी को चीधे वगसे  
 अक्षय निधि यिनि साधन हरसे,  
 भाव अक्षयनिधि लाथो, तपस्वी तन मन से ॥ पर० ३ ॥  
 निज निज का मगल घट ठाओ,

अक्षय घोडा नित्य भराओ,  
 उत्सव टाट रचाओ, तपस्वी तन मन से ॥ १०८ ॥  
 ममवगाण में प्रभु पधराओ,  
 कल्पवृक्ष पूजा गिरचाओ,  
 अखण्ड ज्योति जगाओ, तपस्वी तन मन से ॥ १०९ ॥  
 धूप दशम फूलों की माला,  
 भर भर फल नैवेद्य के थाला,  
 भक्ति में प्रेम लगाओ, तपस्वी तन मन से ॥ ११० ॥  
 पंच शब्द वाजिन बजाओ,  
 हृष गय रथ सिंगार सचाओ  
 गावन शोभा बढ़ाओ, तपस्वी तन मन से ॥ १११ ॥  
 पूजा और प्रभावना करके,  
 पुण्य भंडारा अपना भण्डे,  
 जीवन में हुलसाओ तपस्वी तन मन से ॥ ११२ ॥  
 मामायक पडिकमणा करके,  
 देव उठन गुरु वंदन-करके  
 रत्नत्रय प्रकटाओ, तपस्वी तन मन से ॥ ११३ ॥  
 सोलह दिन तक तर करके  
 सबत्सरी दिन पूण्य करके  
 प्रभु गुण रात जगाओ, तपस्वी तन मन से ॥ ११४ ॥  
 अक्षय निधि अक्षय सिद्ध करके,



जिन हरि पूज्य वीर प्रभु बोलें,  
जय जय नाड गुंजाओ, तपस्वी तन मन से ॥ पर० ११ ॥

### अक्षयनिधि-ध्यान स्तवन-४

( तर्ज—सरोता कहा भूत आये० )

ॐ अहं पद प्यारा

हमारे मन भागया, ॐ अहं पद प्यारा ॥ टेर ॥  
 ॐ अहं पद आतम अनुपम, गुण अक्षयनिधि धारा ।  
 द्रव्य भाव अक्षयनिधि तप म, है वह लक्ष हमारा ॥हमारे. १॥  
 पर इदगल परिणति को तजर, मिथ्या भाव मिटाया ।  
 सम्यग्दर्शन करके आतम आतममे ठहराया ॥हमारे २॥  
 ज्ञानादिक गुण पर्यायों का आतम पिण्ड हमारा ।  
 परद्रव्यों से जुदा अपना, स्व स्वभाव निरधारा ॥हमारे ३॥  
 स्व-स्वभाव मे ही है सत्ता, लेश न पर परचारा ।  
 पर में फल कर भयमें भटका, पाया आज किनारा ॥हमारे ४॥  
 हेय—ज्ञेय सारी दुनिया में, कोई नहीं हमारा ।  
 आतम ही आतम मैं हूँ, यह उपादेय अतिकारा ॥हमारे ५॥  
 इव्यालंघन मावाभिमुख, वृत्ति आन हमारी ।  
 भावरूप अक्षयनिधि आतम, ध्यान विधि विस्तारी ।मा ६।  
 शुद्धातम बुद्धि अभिबुद्धि, सिद्धि समृद्धि विधाना ।  
 समझ समझ कर आराधन यह, हमने मनमें ठाना हमारे ७।

मनमगल घट हुआ हमारा, देवगुरु मन्त्रमंगी ।  
 गुण अक्षयनिधि मरने जीवन, पारन पद मरवगी हमारा ।  
 वन्द्ययत्र वन्द्युम जैमा, गुमनग् पूजा चगी ।  
 ज्ञानशरीर अमरहित ज्योति, पूष घटा गुण रगी । हमारे ह ।  
 उर्द्धमान आतम मुसुमागर, जामन जय जय करी ।  
 परमगुरु भगवान शरण में, थहा वही हमारी हमारे १० ।  
 निनहारि पूज्य परम पूर्योत्तम, अक्षयनिधि अधिशारी ।  
 आतम परमातम पद पाये, कर्म फलक निवारी । हमारे ११

## अक्षयनिधि तप-महिमा स्तवन-५

[ दोहा ]

श्रीकलशदि वार्धजिन, उठ प्रणमं परमान ।  
 उत्तम अक्षयनिधि नगी, भार्गव अक्षयदान ॥ १ ॥  
 प्रवचन-मारोहार म, तपके भेद अनेक ।  
 अक्षयनिधि-तपकीषिये, दृश्य भाष मरिदक ॥ २ ॥  
 अवराम का मेटना अक्षयनिधि तप मार ।  
 पूर्योत्तम राता लहे, अक्षयनिधि भण्डार ॥ ३ ॥  
 पर्येषण पासा प्रथम, तप आरभ विधान ।  
 चिनवाणी बद्धमा मे, प्रकटे अक्षय निधान ॥ ४ ॥

टाल—१

( तर्ज-आठे लाल )

जन् मरन प्रयान, पुरी विनाला अधिधान ।  
 आठे लाल, शासन स्वामी समोमर्याजी ॥ १ ॥

चेडा राजा नाम, आरक गुण अभिराम ।  
 आछे लाल, श्रीजिनवन्दन आधियार्जी ॥२॥  
 उपदेशें भगवान, दुर्लभ नम्भर जान ।  
 आछे लाल, धर्म प्रिया सुप्र पामिवेजी ॥३॥  
 दान शीयल तप भार, कीजें पुण्य प्रभाव ।  
 आछे लाल, आतम गुण उजगालियेजी ॥४॥  
 तप के मेद अनेक, कीजें जो सरिवेक ।  
 आछे लाल, कर्म निष्ठाचित काटियेजी । ५॥  
 नामे अक्षयनिधि मेद, माधन हारे खेद ।  
 आछे लाल, अक्षयनिधि प्रश्टारियेजी ॥६॥  
 अक्षयनिधि विधि योग, पुरुषोत्तम सुप्रभोग ।  
 आछे लाल, पुण्यचरित्र अक्धारिये जी ॥७॥  
 पुरुषोत्तम कुण एह, पुण्य-सुपावन देह ।  
 आछे लाल, पूछे चेटक राजियो जी ॥८॥

❀ दोहा ❀

फरमावें शासन पति, सुगजो चेटक राज ।  
 पुरुषोत्तम पावन चरित, निज आतमदित काज ॥

ढाल—२

(तर्ज—सोभागी जिनसु लागो अविद्वड रग)

नमो रे नमो ज्ञान-धनी जिनचद

दमो रे दमो आतम इन्द्रिय वृन्द ॥ टेर ॥

भागिक भावे भावनाजी, श्री भट्टर सेठ ।  
 पुरुषोत्तम सेरु मुखेजी, उत्तम गुण जग सेठ ॥नमो०१॥  
 भट्टर थाराधतो जी, अक्षयनिधि तप सार ।  
 अनुचर अनुपारी हुयोनी, भय भाव चित्तवार ॥नमो०२॥  
 करण करण जाणियेजी, अनुमोदन शुभभावर ।  
 तीनों एक समान है जी, विररण सफल स्वभाव ॥नमो०३॥  
 पुरुषोत्तम प्रवदण चटयोत्री, सेठ तणे व्यापार ।  
 दैवयोग से भजियोजी, प्रवदण सिन्धु मन्कार ॥नमो०४॥  
 ॐ अहं पद ध्यान में जी, पुरुषोत्तम लवलीन ।  
 सागर तट भटपट गयोत्री, विरट सकट मयोक्षीणानमो०५॥  
 पद पद मपद पामियोजी, रतनपुरी से राज ।  
 सेरु वह स्वामी भयोनी, पुरुषोत्तम महाराज ॥नमो०६॥  
 पटरानी पदमावती जी, पुण्य तणे परिणाम ।  
 दपति भावे सावताची, धरम अरथ अरु काम ॥नमो०७॥  
 द्रव्य भाव अक्षयनिधिजी, श्री पुरुषोत्तम भूप ।  
 सविधि साधन कीनियेजी, अधिकारी अनुरूप ॥नमो०८॥

ॐ दाहा ॐ

रतनपुरी पावन करें, मुनिसुधन भगवान् ।  
 पुरुषोत्तम धत्त विधि, करे विनय बहुमान् ॥

## ढाल—३

( तर्ज—तीरथनी आसानना नधि करिये )

परमातम पद बटना नित करिये ।

हारे निज आतम आनद भरिये ॥

हारे भय सागर हेला तरिये ।

हारे काठी कमो का फद ॥ परमातम० टेर ॥

उपदेशे सुनत प्रभु ममोसरखे ।

हारे भयि निर्मल अत.करखे ॥

हारे धर्मारधन शुद्धाचरखे ।

हारे टारे दुख दद ॥ परमातम० १ ॥

पुण्योत्तम पूरव भवे अपराधी ।

हारे मुनि—निदा धर्म—सिराधी ॥

हारे याते सेनक पदवी लाधी ।

हारे तोडो पाप—प्रमथ ॥ परमातम० २ ॥

अक्षयनिधि तप इह भवे अधिकारी ।

हारे अक्षयनिधि—सपति सारी ॥

हारे राज—भोग मिले सुखकारी ।

हारे यह पृथय प्रमथ ॥ परमातम० ३ ॥

आतम कर्ता कर्म का फल भोगी ।

हारे भव मे भटके जड लोगी ॥

हारे निर्वाण लहे उपयोगी ।

हार होय शिव सुभ्र-रुद्र ॥ परमात्म० ४ ॥  
श्रीमुनि-सुव्रत-नाथ न। अनुयायी ।  
हार पुरुषोत्तम पुरुष कर्माई ॥  
हार निज आत्म ज्योति जगाई ।  
हारे पावे परमानन्द ॥ परमात्म० ५ ॥  
ज्ञान अक्षयनिधि साधना विधि करिये ।  
हारे अज्ञान दशा परिहरिये ॥  
हारे परमात्म पदवी वरिये ।  
हारे छोडी छल—छद् ॥ परमात्म० ६ ॥  
शामन स्वामी वीरनी करमाया ।  
हारे जिन आगम मे गुण गाया ॥  
हारे भयात्म के मन भाया ।  
हारे कर आश्रव रुद्र ॥ परमात्म० ७ ॥  
द्रव्य भाव भक्ति भरू निज घट मे ।  
हारे अक्षत भरू मगल उट मे ॥  
हारे धरू धीरज मे सफट म ।  
हारे घ्याउ जिनचद् ॥ परमात्म० ८ ॥

कलश

इम देव वदन ज्ञान-ध्याने पाप-ताप निवृद्धन,  
अक्षयनिधि तप साधन जीवन परम आनन्दनम् ।  
सुख सि धु पद भगवान् जिनहार पृथ्वपावन शासन,  
अन्दू मदा मे भक्ति से परमात्म-गुण सुधिदामनम् ॥

## अक्षयनिधि-स्तुति—१ ।

ॐ ह्रीं ऐं धीजात्तर युत पावन मंत्र,  
 नाणस्रस नमो नित ध्यापो गुरु परतत्र ।  
 गुरु पारतय में हो श्रुतप्रता योग,  
 अक्षयनिधि आतम पावें शिव सुख भोग ॥१॥

ज्ञानावरणादि घाति-करम कर अत,  
 सुर-रचित सिद्धासन राजें श्री अरिहत ।  
 पुण्योदय—प्राणी पावें दर्शन योग,  
 अक्षयनिधि आतम पावें शिव-सुख भोग ॥२॥

जिन आगम पूजा प्रकटे आगम ज्ञान,  
 मगल घट पूरण अक्षत-गुण परधान ।  
 हो द्रव्य-भाव से विधि सद्गुरु सयोग,  
 अक्षयनिधि आतम पावें शिव-सुख भोग ॥३॥

शामन परभावना प्रभु पूजा अधिकारी,  
 पर्युपण पास्त्री—एकासन तप धारी ।  
 रक्षक हों उनके "सुर-नाणपति हरि" लोग,  
 अक्षयनिधि आतम पावें शिव-सुख भोग ॥४॥

## अक्षयनिधि-स्तुति—२ ।

सप्तसरी अतिम सोलह दिन अधिकारी,  
 अक्षयनिधि तप विधि जगमें जय जयकारी ।

अहं एव ध्याने ज्ञान मुपारम वीन,  
 ज्ञानम परमात्म होयें भाव-अदीन ॥१॥  
 पुरुषोत्तम-पदमाशनी प्रमुख नर-नारी,  
 अक्षयनिधि मापन जग ज्योति विसहारी।  
 तव कर्म तपावे पाप सपावे भारी,  
 सिद्धात्म होयें जाऊं मैं यक्षिहारी ॥२॥  
 आगम में गाया अक्षयनिधि अधिहार,  
 मुनि मुग्रन स्वामी शरद-शरण स्वीकार।  
 पुरुषोत्तम पुरुषोत्तम पर पाया धन्य,  
 आगम आहार, तन-मन-भाव अनन्य ॥३॥  
 अक्षयनिधि तव मे अनराय हो हूँ,  
 हूर "गणनायक हरि" देयें मुन्य भरपूर।  
 अक्षयनिधि आत्म-बुद्धि-शुद्धि अतिरेक,  
 श्रुतदेवी देयें शुभ-गुण पुण्य विवेक ॥४॥

### अक्षयनिधि-स्तुति—३ ।

शामन-पति रात्रि समप्रसरण अमिराम,  
 आगम उपदेशों भव्य जीव विराराम।  
 मंगल षट अक्षत गुण पूरण परिणाम,  
 सुविहित विधि पूजा-गाउ प्रभु गुण माम ॥१॥  
 ज्ञानावरणी से रुका हमारा ज्ञान,  
 अज्ञान मिटावे अखंड ज्योति ध्यान।



निज आत्म ध्याने प्रकटे पुण्य प्रकाश,

ध्यातं परमात्म मनमें धर विश्राम ॥२॥

प्रवचन में भाष्यो अक्षयनिधि आरम्भ,

पर्युषण पहिले पाखी गिन निर्दम्भ ।

पूजा-परभाषना प्रकासन तप अत,

उपजासी होकर पाउ क्षान अनत ॥३॥

तप स्वीचे होवें सदा सहायक दंब-

'गणपतिहरि' वादित फल देवें स्वयमेव ।

अक्षयनिधि तप से अक्षयनिधि हो जाय,

श्रुत-सागिव देवे श्री श्रुतदेवी माय ॥४॥

## अक्षयनिधि-स्तुति—४ ।

[ मालिनी छन्द ]

१-खयनिधि-विहाण सब्ध भाव प्रहाण,

त्रिणयर-उवइष्ट भव्य-जीवाण इष्ट ।

२-कुण्ड-निरोहं पुण्य-रुक्ख-पर्रोह,

सरइ पणव-मत अप्पणो नाणतत ॥ १ ॥

३-निय-भयचाल नाणरुव विचाल,

पर्याडिय-गुणमाल पुण्य-रुव विसाल ।

४-कुमद-कुचाल, मोह-सम्मोह गाल,

सरइ निय-रपाल सिद्धचोई सचाल ॥ २ ॥

५-सहिय-माया-लकिय हो अमाया,

परशु-सुव दीपं भाणसे नाणरीय ।

तद्गुण-गव-पाथ सामण मण्यभाय,

सरद् सरद् मारं ह्योतु सत्तार पार ॥ ३ ॥

अव्ययनिधि सशस्त्रि-परामणोरामगन्धि,

त्रिणवर-वय-पूआ-द्वय भार-व्यभूआ ।

जल्यद् बहु तुण्य सपय सोम्स्य पुण्य,

“त्रिणहरि” बहु मार्गं, जायन् अप्पमारुं ॥ ४ ॥

## अत्यनिधि-स्तुति—५ ।

[ वसत तिलरा ]

अहं नम प्रथमतो हृदये निधाय,

दिश्व तपोऽक्षयनिगण मधो विधाय ।

प्राग्य सुराग्य-सुग मत्र परत्र लोके,

स्वर्गापिबर्ग-चनित सुवना भज्जग ॥ १ ॥

श्योति - स्वस्वमपि संभवतीद् तेषा,

येषा मनोऽक्षयनिधि-श्रव-सावधानम् ।

आसुप्रनाधिधधिभो पुत्रपोस्तमेन,

प्राञ्ज सुराहमपि तत्सतत्र अशामि ॥ २ ॥

जेनागमो जयतु यत्र पवित्र-मात्र,

पात्र तपोऽक्षयनिवे प्रजित अशस्तम् ।

इन्द्रा-सुरोधन-विरेक-द्वयैक-बुद्धि-

प्रीडात्मना भवतु वर्य सनात्मशुद्धये ॥ ३ ॥

देवी श्रुतस्य मुखसागर—वृद्धि—हेतु-

भूयात्मदा भगरदृष्टिऋजाधितानाम् ।

पाप-प्रणाश-चतुरा हरिपूज्य-भाषा,

श्रीभारती भगवतीह महाप्रभावा ॥ ४ ॥

## अक्षयनिधि तप में ज्ञान-पद वंदन

ॐ दोहा ॐ

पर्युषण पाखी प्रथम, तप श्री अक्षय निधान ।  
 आराधन कर भाव से, वन्दू ज्ञान महान ॥ १ ॥  
 अनुष्ठान अमृत-गुणी, अक्षयनिधि विधि जान ।  
 चढ़ समकित गुण ठाण से, वन्दू ज्ञान महान ॥ २ ॥  
 हेय-श्रेय ससार है, उपादेय स्वज्ञान ।  
 तीन भाव परकाश कर, वन्दू ज्ञान महान ॥ ३ ॥  
 समभावें छद्मद्रव्य के, गुण-पर्याय-वितान ।  
 रूपा-रूपी भाव में, वन्दू ज्ञान महान ॥ ४ ॥  
 परमारय की देशना, माखें श्री भगवान ।  
 अधिकारी आराधते, वन्दू ज्ञान महान ॥ ५ ॥  
 समकित दृष्टि जीव को, प्रस्टे सम्यक् ज्ञान ।  
 तसफल थिरति धारकर, वन्दू ज्ञान महान ॥ ६ ॥  
 प्रस थावर जग-जीव को, तरतम भाव निदान ।  
 क्षयोपशम प्रकटित पुनित, वन्दू ज्ञान महान ॥ ७ ॥

मनन रूप मति ज्ञान से, प्रकट आत्म ज्ञान ।  
 हेतु हेतुमद् भाव से, बद् ज्ञान महान ॥ ८ ॥  
 इन्द्रिय मन सहा जनिव, जीवन में परधान ।  
 मत्तुण आत्म द्रव्य का, बन्दू ज्ञान महान ॥ ९ ॥  
 मति पूर्वक भुव ज्ञान है, पावन नय परमाणु ।  
 सामोपाग अनेक विध, बन्दू ज्ञान महान ॥ १० ॥  
 अरथे अरिहत आश्रियो, गुण रत्नों की मान ।  
 मूत्रे गणुवर गूथियो, बन्दू ज्ञान महान ॥ ११ ॥  
 स्वर ध्वजन पद् धरणा, धर रचना अमलान ।  
 आत्म भाव प्रकारा में, बन्दू ज्ञान महान ॥ १२ ॥  
 भुत अनत अरथे भयो भयो भाव विज्ञान ।  
 अगम निगम गुग्गम सहित, बन्दू ज्ञान महान ॥ १३ ॥  
 भवण क्रिया श्रुत काम हो, टरे पाप अभिमान ।  
 पाप गया सुम्ह उपजे, बन्दू ज्ञान महान ॥ १४ ॥  
 त्रिपदी तिरचेनी जहां, हरे मोह अज्ञान ।  
 जीवन को पावन करे, बन्दू ज्ञान महान ॥ १५ ॥  
 श्रीश्रुत ज्ञानी पैवली, धेवन ज्ञान समान ।  
 जद् चेतन भामन करे, बन्दू ज्ञान महान ॥ १६ ॥  
 मयादा-अवधि विषय, रूपि-पदारथ मान ।  
 देश धकी प्रत्यक्ष यह, बन्दू ज्ञान महान ॥ १७ ॥  
 मसी जीव विशेष वे, जानें मन संज्ञान ।  
 मन-पर्यायी भाव मय, बन्दू ज्ञान महान ॥ १८ ॥

लारा-जोष विनोदने, परतिग्न अख्यध्यान ।  
 सायिक भावे धरतने, यन्दू ज्ञान महान ॥ १६ ॥  
 गृह्य रागर समार में, पदमान भगवान ।  
 अविमंशदी आनमा, यन्दू ज्ञान महान ॥ २० ॥  
 अक्षयनिधि सुपन विधि, बौध धुद्धि अख्यान ।  
 जिन हरि पूजिन तीव मे, यन्दू ज्ञान महान ॥ २१ ॥

—२५०—

उपर लिखे गेहे श्री भुक्तज्ञान की स्थापना का प्रदर्शिका करते  
 हुए—स्वमात्मण पूर्वक बोलने चाहिये ।

### —. दैनिक-विधि —

इर्यारही करके इन्द्राकारेण सन्निह् भगवन् अक्षयनिधि नप  
 चैत्यवन्दन करू इन्द्र पद् कर—चैत्यवन्दन जयगीयराय पर्यन्त कहे ।  
 बाद सुयदेवयार करमि काउरसग—अन्नतथ एक नवकार का  
 काउरसग । नमोऽर्हत कहकर—स्तुति कहे—

सुयदेवया भगवद्, नाणावरणीय कम्म संघाय ।  
 तेसिं एवेउ सययं, जेमिं मुथ्थमायरे भत्ति ॥ १ ॥

बाद एकामन का प्रत्याख्यान करना चाहिये । नवपत् पूजा  
 में से ज्ञान पद पूजा पढ़े—



## श्रीज्ञानपद-पूजा

[ ६४ ]

सप्तम पद भी ज्ञान जो, सिद्ध भक्त तप मादि ।  
धराधीने शुभ मने, दिन दिन अधिक दयादि ॥१॥

श्लोक

अग्नाग्नयेमोहनमोहरस्म, नमो नमो नाणदिवापरस्स ।  
पंचप्यायु उगारगस्म, मन्त्राण तत्तत्प्यप्यागगस्म ॥१॥  
हुवे चेहथी मर्ष अज्ञान रोधो, जिनाधीश्वर प्रोक्त अर्थापरोधो ।  
मति आदि पंच प्रशारे प्रमिद्धो, जगद्भामने सर्वदेवारिहृद्धो ॥२॥  
यदीय प्रभावे तुमच्च अमर्ष, गुपेय अपेयं तुकृत्य अकृत्यं ।  
जेणे ज्ञानीण लोकमध्ये मुनाण, मटा मे विशुद्धं तदैव प्रमाणा ॥३॥

ढाल

अग्न्य नमो गुणज्ञानने, स्वपर प्रकाशक भावे जी ।  
परजाय धर्म अनतता, भेदाभेद स्वभावेजी ॥१॥ (चाल)

( उल्लास )

जे मुग्न्य परिणति सकल ज्ञायक, बोध भाव विलच्छना ।  
मति आदि पंच प्रशार निर्मल, सिद्ध साधन लच्छना ॥  
स्वाद्वादमंगी तत्परंगी, प्रथम भेदा-भेदता ।  
सविज्ञान्य ने अविज्ञान्य वस्तु, मरुल सशय

## ढाल ( आमाउरी )

भरिना, मिद्धचक्र पद वदो ॥१॥

भक्ष्याभक्ष्य न जे विण लहिये, पेय अपेप विचार ।  
 कृत्य अकृत्य न जे विण लहिये, ज्ञान ते मरुत आधाररे ॥१॥  
 प्रथम ज्ञान ने पछी अहिंसा, श्री सिद्धाते भारयु ।  
 ज्ञानने वदो, ज्ञान म निंदो, ज्ञानीए शिवमुख चारयु रे ॥भ ॥२॥  
 सकल क्रियानु मूल जे श्रद्धा, नेहनु मूल जे कहिये ।  
 तेह ज्ञान नित्य नित्य वदीजे, ते विण कहां केम रहियेरे ॥भ ॥३॥  
 पच ज्ञानमाहि जेह सटागम, स्वपर प्रसाशक जेह ।  
 दापक परे त्रिभुवन उपकारी, वली जेम रावि शशी मेहरे ॥भ ॥४॥  
 लोकर ऊर्ध्व अधो तिर्यग् ज्योतिष, वैमानिक ने मिद्ध ।  
 लोकांलोक प्रगट सवि जेहथा, तेह ज्ञाने मुक्त शुद्धरे ॥भ ॥५॥

### ढाल

ज्ञानावरणीय जे कर्म छे, क्षय उपशम तम थाय रे ।  
 ती हुए एहिज आत्मा, ज्ञान अबोधता जायरे ॥१॥  
 धीर जिनेश्वर उपदिशे, तुमे साभलली चित लाई रे ।  
 आतम ध्याने आतमा, मिद्ध मिले सह्यु आई रे ॥श्री० २ ॥

मंत्र—ॐ ह्रीं अहं परमात्मने अनतानत ज्ञानशक्तये जन्म  
 जरा मृत्यु निगारणाय अक्षयनिधि ज्ञानपदधारकाय श्री जिनेन्द्राय  
 जन चदन पुष्प धूप दीप गंध अक्षत नैवेद्य यजामहे स्वाहा ।

इस मंत्र को पढ़कर उप द्रव्यों को चढ़ाये । वासुदेव पूजा करे ।  
 सोना रूपा नाणा चढ़ावे । ज्ञान की पुस्तक लिखावे । ज्ञान की  
 पुस्तकें छपाये । पढ़ने वालों की भक्ति करें ।

## ❁ अक्षयनिधि तप महात्म्य कथा ❁

— ❁ —

भारतवर्ष के विशार, प्रात में गणपति की सुप्रसिद्ध रातपाठी 'विशाला नगरी' गढ़-मठ-मन्दिर-महल-मन्तान-बाजार-बाग बागडिया—कुँवा—तालाब—घन—उपवन आदि अपने अतुल्य साधना से संसार में मर्यादा मानी जाती थी। गणपति की अक्षयता करने वाले महाप्रतापी—महाराज 'चेटक' अपनी उदार वाच्य नीति से विशाला का शासन करते थे। आपके राज्य में प्रजा अपने सुखी जीवन में स्वराज्य का अनुभव करती थी।

महाराज चेटक भगवान श्रीमद्दधीरदेव के परम शिष्यों में से एक थे। समय २ पर सरसंग का लाभ प्राप्त करने के लिये साधु सत्तों के सहपदेश सुनकर प्रसन्नता का अनुभव करते थे। एक समय भगवान श्री महाराज देव विशाला के उपवन में पधार। महाराज चेटक बड़े उत्कृष्ट भावों से अपने रात परिवार एवं नागरिक लोगों को लेकर रातसी टाड के साथ भगवान के स्वगत के लिये उपवन में पहुँचे। बँधर-झर-जूते मगरी और सचित्त का त्याग कर महाराज ने बड़े विनय के साथ भगवान को घड़ना की और भगवान का अभिमन्त्रण करते हुए अपनी आत्मा को धर माना।



वही समय देवताओं ने वहा समप्रमाण-मत्सरा सभा की तैयारी की। भगवान अपनी दिव्य साधु महली के साथ व्याख्यान पीठ पर बिराजे। महाराजा चेटक आदि लोक अपने उचित स्थानों पर जा बैठे। सावधान मन से भगवान का उपदेश सुनने लगे। भगवान ने अपनी सुधामधुर देशना फरमाना शुरु किया—

भव्यात्माआ ! प्राणी मात्र सुख को चाहते हैं। पर ससार म सुख के स्थान में दुःख ही दुःख अनुभव होता है। कारण प्राणी अपने गलत पुरुषार्थ से दुःख के ही बीज बोया करता है। बीज के अनुरूप ही पेड़ और फलका हाना भी स्वाभाविक है।

१—मिथ्यात्वे=अज्ञान से, २—अविरति-अमर्यादित जीवन से, ३—कपाय-क्रोध मान नाया और लोभ से ४—योग मन वचन फायारी भवाभिमुख मासारिक प्रवृत्ति से जो पुरुषार्थ क्रिया जाता है, उससे जो सत्कार आत्मा म संचित हो जाते हैं, उन सत्कारों को 'कर्म' कहते हैं। ये कर्म—समय आने पर अपने आप विपाक फल रूप से भीगने पड़ते हैं।

कर्मों की सत्ता को समूल नष्ट करने के लिये इच्छा रोधन रूप तपो धर्म प्रभाशाली उपाय माना गया है। तपो धर्म कई प्रकार से अनुष्ठित होता है। उनम भी अज्ञयनिधि तप आत्मा की ज्ञान दर्शन चारित्र रूप गुणों की अज्ञयनिधि को प्रकट करता है। इस लोक और परलोक में इस अज्ञयनिधि तप के प्रभाव से पुन्योत्तम-पुरुषोत्तम के जैसे मनुष्य अपनी गुलामी को मिटाकर

इस भाव साम्राज्य का स्वामी बन जाता है। नहाराना चेटक ने स्वमित्त के साथ भगवान से प्रार्थना की कि हे भगवन ! यह साम्राज्य पुण्योत्तम कीन हुआ, जिसका पवित्र नामारत्नेव आप श्री के सुधारिद से सुनने को मिला। भगवान ने फरमाया कि—  
ह सन्न ! सामधानता से इस पुण्य चरित को सुनिये।

बीमबे तीर्थंकर भीमुनिसुप्रन स्वामी के शासन काल में दक्षिण दिशा के सामुद्रिक किनारे पर भृगुकच्छ नाम का एक भारी पन्द्रगाह स्थल पल के विशिष्ट-व्यवसायो का एक केन्द्र स्थान बना हुआ था। वहा भद्रकर नाम का एक धा कुचेर माधु सत्तो का सत्सगति से अपने गृहस्थ जीवन को मर्यादित प्रतोवाला बनाय हुए रहता था। शायक भद्रकर के घर में एक सरल परिणाम वाला शेट का प्रेम पात्र पुण्योत्तम नाम का एक नौकर नौकरी करता था।

शेट के धार्मिक संस्कारों की छाप उनके परिवार में एष नौकर चाकरों पर भी सुन्दर रूप से पडी थी। श्रीज्ञानतीर्थ नाम के मातुपुंगव अपने समयि शिष्यो के साथ एक दिन भृगुकच्छ में पगारे आपने तपो धर्म की व्याख्या के प्रसंग में अक्षयनिधि तप का मानना बताई। भद्रकर सेठ ने अक्षयनिधि व्रत को भीगुरु स्व से स्वीकार कर आराधन किया। उन समय सेठ की सेवा में रहने वाले पुण्योत्तम की भव्य भावना भी अक्षयनिधि व्रत विधि साधना में आदृष्ट हुई।

प्रभु पूजा गुरु भक्ति, ज्ञान साधना, तप, ध्यान, एव रात्रि जागरण आदि में यह पुरुषोत्तम सेठ का अनुगामी हो गया। उस साधना से उतने भारी पुण्य का उपार्जन किया। सेठ ने उसे साधारण नौकरी से हटाकर अपने व्यापार का प्रधान कार्यवाहक बना दिया।

एक दिन दूररे देशों में व्यापार के निमित्त भेजे हुए जहाज में पुरुषोत्तम मुख्याधिकारी होकर सामुद्रिक यात्रा को कर रहा था। अचानक अरब के उठने से जहाज टूट गया, पर पुरुषोत्तम 'ॐ नमो अरिहताण'—मंत्र के उच्चारण के साथ मगर मच्छ की पीठ पर बैठ कर किनारे पर बिना किसी कष्ट के पहुँच गया।

किनारे पर रत्नपुरी नाम की एक नगरी वर्तमान थी। वहाँ का राजा रत्नसिंह उसी रात्रि अपुत्रिया मृत्यु प्राप्त हो गया था। उस समय मंत्री मंडल ने यह तय किया कि पांच दिव्य किया जाय और जिस पुण्यवान पुरुष को दिव्य द्वारा चुना जाय, उसे ही राजा बनाया जाय।

हाथी मजाया गया, घोड़ा तैयार किया गया, केंदारी कन्या माला लिये फिरने लगी चरर और छत्रधारी पुरुष तैयार हुए। इन सबके साथ वाजे बजते हुए मंत्री मण्डल आदि अधिकारी वर्ग प्रमुख नागरिक लोग जलम के साथ चलने लगे। महाभाग पुरुषोत्तम उन्ही समय किनारे पर थोड़ी देर सुस्ता कर शहर का ओर आने लगा था, कि रास्ते में हाथी ने सूट उची करके उसे

अपने कंध पर बिठा दिया । घोडा दिनदिनाते लगा । कन्या ने अपनी माला उमे पहिना ली । चँवर झुनाये गये एवं हृदय धारण किया गया । आवाश में शामन बबता ने "महाराजाधिराज पुण्योत्तम देव की नय हो" के नार लगाते हुए पूजों की वृष्टि की ।

उलूम के सभी लोग आमोद-प्रमोद में इस नये राजा की जयनाच से रगत करने लगे । चारों ओर प्रसन्नता का वायु मंडल छा गया । एक दिन का नौर पुण्योत्तम, महाराजाधिराज पुण्योत्तम देव बन गया । पद्मावता राज का एक सद्गुणशीला परम सौन्दर्य शालिना राजकन्या के साथ विवाह हुआ । दूसरी भी कई सुन्दर राज कन्याओं का पारिमहल किया । पट्टराणी पद्मावती के साथ अपने सुगम जीवन का विनात हुए रत्नपुरी का राज्य न्याय नीति के साथ पालन करने लगा ।

एक दिन वहा भगवान श्रीमुनिसुब्रह्म स्वामी पधारे । महाराजा पुरुषोत्तम देव भगवान की धरना को आये । भगवान ने तप धर्म की महिमा का वर्णन करत हुए अक्षयनिधि का स्वरूप बताया । महाराजा पुण्योत्तम ने कहा हे भगवान ! किम कारण से एक दिन का मेवक मैं इस साम्राज्य का स्वामी बन गया हूँ ।

भगवान परमात्मा लग नि इसी अक्षयनिधि तप के अनुमोदन से हे देवानुप्रिय ! यह सारी साम्राज्य लाला आज भोग रहे हो । पुण्य क्रिया का करना करना और अनुमोदन करना ये तानो करने वाले को लाभदायक ही होते हैं ।

महाराजा पुरुषोत्तम देव ने विशेषतया साधधानी से अक्षयनिधि तप की साधना की । उसका लोगों में भारी प्रचार हुआ । बाद में आपने पञ्चोत्तर देव नाम के प्रधान पुत्र को राज्य का भार सौंप कर भगवान श्री मुनिमुग्रन स्वामी के श्रीचरणां में भाग्यती दीक्षा स्वीकार की ।

राजर्षि पुरुषोत्तम देव द्वादशांगी के ज्ञाता होकर विविध तपस्याओं को करते हुए कर्मा की सत्ता समूल नष्ट कर केवल ज्ञान पाकर अरिहत हो गये । बाद में कई भव्यात्माओं को उपदेश देते हुए पृथ्वी मण्डल को पावन करते हुए अन्त में श्री सिद्धाचल तीर्थाधिराज पर एक मास की सलसना कर सिद्धि गति को पाये ।

इस प्रकार भगवान श्री महावीर स्वामी ने महाराजा चेटक से कहा कि हे परम श्रावक ! अक्षयनिधि तप के—अधिनारी नर-नारी द्रव्य भाग अक्षयनिधि को प्राप्त करते हैं । महाराजा चेटक ने भगवान को धनना की, और भगवान की जयनाद के साथ अक्षयनिधि तप की भावना को लेकर वापस विशाला में आये और भगवान श्री महावीर देव पृथ्वी मण्डल को पावन करते हुए विचरने लगे ।

इस कथा को सुनकर भव्यात्मा तपस्या में प्रवृत्त हों और आत्म लाभ प्राप्त कर ।

॥ इति अक्षयनिधि-तपोविधि समाप्त ॥

## असार ससार की बोधप्रद लारणी

इखत मूली ग्याल तमाशा वाजीगर का है खिलका ।  
 ए ससार ! तू ऐसा बादल, ओस बूद बिजली चमका ॥  
 सन्गुरु सीख माने क्यों नहीं जनम मरन का दुख मिटता ।  
 दान शीयन तप भार और, ससार समुद्र का फद कटता ॥  
 सिमर पोसो करो सामायिक, सूत्र सिद्धान्त पर चित धरता ।  
 व्याख्यान वाणी सुणोर भद्रा से, पाप घटे ज्यु पुण्य बधता ॥  
 शुई सभाई बोले रे थोक्झा, नव पत्थरथ मुख करता ।  
 जान परली समकित पलसी, पानी पिण्ड से गोये डरता ॥  
 इति बुध जो नहीं हुए, नरकार मात्र हृदय धरता ।  
 भार चडावे भवने छेदे, मन बाधित सन सिद्ध करता ।  
 चौदह पूर्व तिया सारी, भगवन्त भाषा है हितकारी ।  
 अनेक तिर्यच तिरिया नरनारी, अढा शुद्ध पाप्यो हितकारी ॥  
 नवमार जपे उची गत पामे, शिवरमणी सुख हे तुमका ।  
 ए ससार तू ऐसा बादल, ओस बूद बिजली चमका ॥  
 प्रथिवी अप या तेयु वायु, वनस्पति हे व्रसकाय ।  
 हकाया ने मार रह्यो है, आरभ कर कर हरगाय ॥  
 छेदन भेदन तरजन घ्रास नो, गाली दे दे धमकाया ।  
 फिरे फिरे ने दुख तू देवे, वेर तिया में वस आया ॥  
 मूठ खोरी मैथुन सेवे, पर नारी से दिल लाया ।  
 स्वाद भोग सुख रसना पेखी परमय चिन्ता नहीं लाया ॥

कोडी कोडी माया षोडी, लोभ लालच मू, उहु छाया ।  
 आण वृणा मेटी नाही, करत हुण माया माया ॥  
 कूड कपट छल छेदन करता, कोडी मटा तू जो लडता ।  
 जाड जोड घरम धन वरता, पापी नरक कुड पडता ॥  
 जनम मरन हे बुरा जगन का जिम कपे जीररा हम का ।  
 गे ससाग तू गेसा वादल ओम घुन्द विजली चमका ॥  
 क्रोध मान अहंकार भरयो हे, राग द्वेष में रग राता ।  
 जाल फामी दगा फाटका, अनेक हुनर चल आता ॥  
 तू दोसा देवे लोका ने, साचे ने कूडा करता ।  
 घडा आत्मी घजर लोका मे, मिथ्यात्व तुम को सोहाता ॥  
 पाप अठारे म्च रुच वाचे, मोह परम को मद माता ।  
 अनेक वस्तु सेवे कइवि, पाप की पोट माथे धरता ॥  
 मात पिता हे हेतु वधु, घेटा लुगाई धन स्वाता ।  
 पाप करम तू गान्धो पण्जो, नरक निगोद में पर जाता ॥  
 मच मतलब की प्रीत मगाई, त्रिना स्वार्थ तू करे लडाई ।  
 प्रणे बल्लभ के गाने गाई, पाप उदय फिर कोई नहीं सहाई ॥  
 मगर पलाणा उम्वा हुता, खूग गया आतम धमका ।  
 ए ममार तू पेमा वादल ओम घूग विजली चमका ॥  
 मारो मारो मत कर मूरख थारा मव यह क्षण का है ।  
 फनक रामनी कुटथ कम्ब्रीला जमी घर देखन का है ॥  
 ज्यु घटाऊ रामु लेवे, पथी पथ त्रिहाणा है ।  
 स्वर्ची है तो खा ले मूरख, आविर पर भर जाना है ॥

एन जोवन झु कुटुम्ब कम्ब्रीला, मेला झु मडाना है ।  
 रिद्धर गया सन जुदा जुदा रे मोह जाल मर जाना है ॥  
 पड़दा सुपारी न्यान पान में, मूँडा न्हट्ट हिलाणा है ।  
 खावे सूवे गपिया मार, यूही जनम गयाना है ॥  
 मोच समझ कुट्ट लीनी नाही, होर पडे झु खावे चाही ।  
 मिथ्या दुस्कर खूण नाही, मनुष्य जमानो फिर है नाही ॥  
 जैन धर्म कुट्ट रचियो नाही, लल रौरासी मे धमका ।  
 ए ससार तू पेसा, घादल थोम वूद विजली चमका ॥  
 मनुष नेव गति दुर्लभ पावो, तिर्यंच गति में जावो ला ।  
 हकाया ने भ्रमता होलो, जनम मरन बघावो ला ॥  
 लेबो बाणिया घणु पद्धतावो, योंही तो पद्धतावो ला ।  
 अल्प अउरो भूख तृषा तप सीस धूप दुख पावो ला ॥  
 नरक तिगोद म दुख घणा है, समझ जीव डिठा भाना ।  
 मगर पलाणे मार परेली, छदन भेदन बहु जाला ॥  
 आस्र मोच तिल मातर खोले, सुख नही इतना फाला ।  
 रास्र मूली अगने पदार, जे छाट मारे भाला ॥  
 पकड़ २ निम कपड़ा चोटा, विरराला पुद्गल मारे खोटा ।  
 झु घरी पर लागे होटा, टुकडा वर २ मारे खोटा ।  
 गुरु एम हरी कहवे सीख, मानो काटोगे चिन फद का ॥  
 प ससार तू पेसा, घादल थोम वून्द विजली चमका ।



## जीव की सज्जाय

आयो एकलो एक ही जासी, क्यों कर एती उदासी रे जीव ।  
कुटुब मित्यो तेरो खगन सभासी, अवध प्रभात उडामी रे जीव ॥

आयो एकलो एक ही जासी ॥१॥

पुद्गल रे प्रपच लुभामी, मिल २ विछर जाये र जीव ।  
गलन परन रो धर्म कहावे निश्चित कौन ठहरावे रे जीव ॥

आयो एकलो एक ही जासी ॥२॥

अच्छा मयोग मिल्या सुख मानेउ, हुवा वियोग दुख ठाने रे जीव ।  
सुख दुख वेहूँ भूटा रे जाये जो नित सरूप पिछाने रे जीव ॥

आयो एकलो एक ही जासी ॥३॥

भोग सयोग में लुभ्यो रे भाई, राह वियोग की भाई रे जीव ।  
तीर्थ पति श्री मुख फरमावे, इन में शका न कोई रे जीव ॥

आयो एकलो एक ही जासी ॥४॥

मोह सुभट धीरज गढ ढावे, ज्ञान बलिष्ट बनावे रे जीव ।  
आरत कोट रो संघ छुडावे, समता रम में लावे रे जीव ॥

आयो एकलो एक ही जासी ॥५॥

## धना जी की सज्जाय

धना में तो धारी रे, धना आज नहीं जोग का ।

सतगुरु बचन विचार के धना, कीजे एक प्रश्न ।

बादल बरखो प्रेमका धना, बीज गया सारा अग ॥ धना ॥

तुम्ह से ए घर शोभता, धना तू छे सार रतन ।  
 दीपक बिन मन्दिर कैसे, धना तुम्ह बिन ए घर सुन ॥धना॥  
 तिरिया बत्तीसे भावनी धना, सुन्दर रूप अपार ।  
 तेरे विरह नहीं सह सकें धना, मत मूको निरधार ॥धना॥  
 चन्द्र बिन कैमे चादनी धना, नग बिन मुन्नी केम ।  
 देव बिन कैसे देहरा धना, तुम्ह बिन काम नहीं एम ॥धना॥  
 पान फूल बिन रुखरा धना, फल बिन बैल बुरूप ।  
 दीपक बिन मन्दिर कैसे धना, गोरियां रूप सरूप ॥धना॥  
 ए घर धन कंचन भरिया धना, सुख भोगो समार ।  
 कल्या माता का मान के धना, समय की नहीं धार ॥धना॥  
 तिरिया बत्तीसे भावनी धना, उन से प्रीत न छोड ।  
 कतियारी के सूत सू धना, निम दूटे निम जोड ॥धना॥  
 सैरफ दीन, दयावना धना, ओ भाई पढ़ताय ।  
 रत्रि उगे सखी आठमें धना, चन्द्र बदन कमलाय ॥धना॥  
 नव मासे उदरे धरया धना, मै मन सह दुख घोर ।  
 बहु दुखा सू पालियो धना, अब तू भयो रे कठोर ॥धना॥  
 तेरे विरह विजोग से धना, दुख किम आषी न जाय ।  
 या जाणे जीव मेरा धना, या जाणे जिनराज ॥धना॥

❀ धना का उत्तर ❀

माता वचन सुणे करी, धना बोल्या इम परवेण ।  
 मुम्ह मत टयो दीक्षा तणी, माता जिम पामू मुम्ह चैन ॥

माता मेरी मैं लेसूरी, मेरा जोग सुहेला री ।  
सजम लेसु हरख सु माता मैं छोड़ू सस  
तन धन जोवन कार म माता, कारण शुभ परि  
माता मेरी मैं लेसूरी, मेरा जोग सुहेला री मा ।  
ए परिजन सहु कार मैं माता, कारण नारी नेह  
भजन भोग महूँ कार मैं माता, कैसे करू सने  
माता मेरी मैं लेसूरी, मेरा जोग सुहेला री मा ।  
ताँ जो कह्या सजम डोहिला माता इनमें शका न कोय  
कायर ने छे डोहिला माता, सुरम्था ने सुख होये  
माता मेरी मैं लेसूरी, मेरा जोग सुहेला री मा (१)  
हूँ मत लीनी मोचनी माता, मैं छोड़ू प्रह वार । २।  
एह सुख मैनों न गमे माता, पाऊ दुख नो न पार ३।  
माता मेरी मैं लेसूरी, मेरा जोग सुहेला री मा (५)  
जैसे चचल विजली माता, तैसे है ससार ।  
ढाभ पर जल बिन्दु श्रायता बठतथा न लागी वार ।।  
माता मेरी मैं लेसूरी, मेरा जोग सुहेला री मा (६)  
जन्म जरा भरख कह्या माता और व्याध दुख रोग ।  
चर्चगति माही मैं मलाया, बधव वैण वियोग ॥  
माता मेरी मैं लेसूरी, मेरा जोग सुहेला री मा (७)



## चिदानन्दजी का उपदेशप्रद एक पद

विरथा जनम गमायो, मूर्ख !

रचक मुखरस धरा होय चेतन, अपना मूल नसायो ।

पाच मिथ्यात धार नू अजहूँ, साँच भेद नहि पायो ॥

विरथा नाम गमायो, मूर्ख ॥

कनक-कामिनी अम ण्ही, नेह निरंतर लायो ।

ठाडू थी तू फिरत सुरानी, कनक बीज मनु खायो ॥

विरथा लम्ब गमायो, मूर्ख ॥

जनम जरा मरणादिङ्ग दुख में, काल अनंत गमायो ।

अरहट घटिका जिम, कही यासो, अंत अजहूँ नवि आयो ॥

विरथा जनम गमायो, मूर्ख ॥

लम्ब चौरामी पहेर्या चोलना, नर नव रूप बनायो ।

वित्त ममकिन सुधारस चाळ्या, गिणती फोड न गिणायो ॥

विरथा जनम गमायो, मूर्ख ॥

एते पर नवि भानत मूर्ख, ए अचराज चित्त आयो ।

‘चिदानन्द’ त घाय जगन् में, जिण प्रभु मूँ मन लायो ॥

विरथा जनम गमायो, मूर्ख ॥



माता मेरी मैं लेसूरी, मेरा जोग सुहेला री मा (१)  
 संजम लेसु हरख नू माता मैं छोड़ ससार ।  
 तन धन जीवन कार मैं माता, कारण शुभ परिवार ॥  
 माता मेरी मैं लेसू री, मेरा जोग सुहेला री मा (२)  
 ए परिजन सहु कार मैं माना, कारण नारी नेइ ।  
 भयन भोग सहूँ कार मैं माता, कैसे करू सन्देह ॥  
 माता मेरी मैं लेसूरी, मेरा जोग सुहेला री मा (३)  
 तौ जो कह्या मंनम डोहिला माता इनमे शत्रु न कोय ।  
 कायर ने छे डोहिला माता, सुरम्या ने सुख होय ॥  
 माता मेरी म लेसूरी, मेरा जोग सुहेला री मा (४)  
 हूँ मत लीनी मोक्षनी माता, मैं छोड़ प्रह वार ।  
 एइ सुख मैनी न गमे माता, पाऊ दुख नो न पार ॥  
 माता मेरी मैं लेसूरी, मेरा जोग सुहेला री मा (५)  
 जैसे चंचल विजली माता, तैसे है ससार ।  
 डाभ पर जल विन्दु आयता उठतया न लागी वार ।।  
 माता मेरी मैं लेसूरी, मेरा जोग सुहेला री मा (६)  
 जन्म जरा मरण कह्या माता और व्याध दुख रोग ।  
 चउंगति माही मैं मलाया, बधव पैण वियोग ॥  
 माता मेरी मैं लेसूरी, मेरा जोग सुहेला री मा (७)



विदानन्दी का उपदेशप्रद एक पद

विरथा जनम गमायो, मूर्ख ।

उद्वेगस परा होय चेतन, अपनो मूल नमायो ।

तन्निष्ठात धार नू अचरुं, मॉच भेद नहि पायो ॥

विरथा जनम गमायो, मूर्ख ॥

इच्छानिनी अम ण्दधी, नेह निरंतर लायो ।

इ धी नू फिरत सुरानो, कनक धीज मनु स्थायो ॥

विरथा जन्म गमायो, मूर्ख ॥

उत्तम परा मरणादिस दुःख में, काल अनंत गमायो ।

धरदृष्ट घटिका जिन, फहो वाको, अंत अचरुं नवि आयो ॥

विरथा जनम गमायो, मूर्ख ॥

नव चीरागो पह्यो चोत्तना, नव नव रूप बनायो ।

विन समकित सुधारम पाण्या, गिणती कोउ न गिणायो ॥

विरथा जनम गमायो, मूर्ख ॥

उत्त पर नवि मानत मूर्ख, ए अचरज चित आवयो ।

'विदान' ते धय जगन्में, विण प्रभु सँ मन लायो ॥

विरथा जनम गमायो, मूर्ख ॥



## अक्षय निधि घट भरने की विधि

२० समासमण देने के बाद एक पसल ( दो हाथ ) में अक्षतका धोवा भरे अर्थात् अक्षत लेकर खड़ा रहे और यह स्तुति बोले ।

बोधागाधं सुपदपदवी नीरपूराभिरामं,  
जीराट्टिसा-पिरललहरी-संगमागाहदेहं ।  
चलावेलं गुस्गममणि-संकुलं दूरपारं,  
सारं विरागमजलनिधिं मादरं साधु सेवे ।

यह स्तुति कह कर घाट में नीचे की गाथा कहे—

“ज्ञान समों कोई धन नहीं, समता समो नहि सुख ।  
जीवित सम आशा नहीं, लोभ समो नहीं दुःख ।”

इस प्रकार धोल कर ३ प्रदक्षणा देकर अपने अपने कुंभ में एक एक पसल अक्षत डाले ।



## ऋषभदेव स्वामी से प्रार्थना ।

बैर नोटी बीनधुनी । सुग स्वामी सुविदीन ॥ ५७ कपट  
 मूकी करीना । वात कहुँ आपकीत ॥ १ ॥ कृपा नाथ मुझ वानती  
 अवधार ॥ ६८ ॥ तू समरथ त्रिभुवन धरणीजी । मुझने दुस्तर तार  
 ॥ ५० ॥ २ ॥ भवमाधर भमना थका जी । दीठा दु म अनन्त ॥  
 भागे संयोगे भेटीय, नी । मयभक्षण भगवत ॥ ५० ॥ ३ ॥ जे दु स  
 भाजे आपणो नी । तेहने रदिये दु म ॥ परतु स्वभक्षण तू सुख्ये  
 जी । सेवकने गो सुख ॥ ५० ॥ ४ ॥ आलौयण लीधा पखेनी ।  
 जीव स्ने ममार ॥ रूपो लक्ष्मणा महासनीनी । यह सुणो अधिकार  
 ॥ ५० ॥ ५ ॥ दूपमकाने दोहिलोजी । सुधो गुरु सयोग ॥ परमारध  
 पीछे नहीनी । गडरमवाही लोग ॥ ५० ॥ ६ ॥ तिल मुझ आगल  
 आपणाजी । पाप आनाउ आत ॥ भाव वाप आगल बोलताना ।  
 बालक रेहो लाज ॥ ५० ॥ ७ ॥ निन धर्म निन धर्म महु कडे नी ।  
 बोपे अपणो रात ॥ ममाचारी जुइ जुइनी । शमय पहनु, मिध्यान  
 ॥ ५० ॥ ८ ॥ जाण अनाएपणे करीनी । बोलया नसूत घोन ॥  
 रतने काग उदारतानी । हाथो जनम निटोल ॥ ५० ॥ ९ ॥ भगवत  
 भायो ते किहाजी किहा मुझ वरणी ण्ह ॥ गन पापर खर किम  
 महेती । मवन विमासण तह ॥ ५० ॥ १० ॥ आप परुष्यो आक  
 रोनी । जाणे लोक महान ॥ पिण न कर्म परमादीयोजी । मा साइल  
 दयात ॥ ५० ॥ ११ ॥ काल अनन्त मैं लह्या जी । तीन रतन  
 श्रीकार ॥ पिण परमादे पाडियानी । किहा जई करु पुकार ॥ ५० ॥  
 ॥ १२ ॥ जाणु उक्छी करु जी । उद्यत करु रे विहार ॥ धीरज



जीव धर नहींनी । पौत घटु संसार ॥ ५० ॥ १३ ॥ महज पत्तो  
 मुक आकरोजी । न गमें रुडा याग ॥ परनिग करता थफानी ।  
 नाये दिनने राग ॥ ५० ॥ १४ ॥ द्विरिया करता दोहिलीजी ।  
 आलम आणें जीव ॥ धरम पगे पंभे पत्तोनी । नरये वग्मी रीव  
 ॥ ५० ॥ १५ ॥ अणुहुता गुण को फहे जी तो हरनु निरादोरा ॥  
 को हित शिक्षा भली कहेनी । जो मन आणु रीग ॥ ५० ॥ १६ ॥  
 याद भणो विद्या भणीनी । पर रहारा उपदेश ॥ मन सवेग घयो  
 नहींनी । किम संसार तरेरा ॥ ५० ॥ १७ ॥ मय मिद्धात घन्नागु-  
 ताजी । सुणता करम विपाक ॥ म्बिण एव मनमाहि उपनेजी ।  
 मुम मरघट पैराग ॥ ५० ॥ १८ ॥ निविध त्रिविध करी ऊरुनी ।  
 भगवत सुद्ध हजूर ॥ पार-पार भातुं पलीनी । छुटव यारो दूर  
 ॥ ५० ॥ १९ ॥ आप कान मुन रापनापा । कीधा आरम्भ कोइ ॥  
 जवणा न करी जीवनीनी । देव दयार छोइ ॥ ५० ॥ २० ॥  
 यान दोष व्यापक यज्ञा जी । दाग्ग अनरथ दण्ड ॥ कृइ कपट  
 घटु षलधीजी । इत कीधा शतन्यड ॥ ५० ॥ २१ ॥ अदीधो  
 लीजे तुणोजी । तोही अदत्ताणा ॥ ते दूषण लागे घणानी ।  
 गिणता नाये ज्ञान ॥ ५० ॥ २२ ॥ चंचल जीव रहे नदी जी । रात्र  
 रमणी रूप ॥ काम विटवण सी कहुनी । ते तू जाणें सरूप ॥ ५०  
 ॥ २३ ॥ माया ममता में पडवोजी । कीधो अधिको लोभ ॥ परिमह  
 मेरयो कारमोनी न बढी संजम शोभ ॥ ५० ॥ २४ ॥ लागे मुभने  
 लालचेजी । रात्री भोजन दोष ॥ मी मन मूषयो माहुरोजी । न धर्यो  
 धरम संतोष ॥ ५० ॥ २५ ॥ इण भव परभव दूह्याजी । जीव  
 घोरधी पाव ॥ ते मय मिद्धाति दण्ड जी । अमयं कोरी पाव

। कृ० ॥ २६ ॥ करमागत पतरे कछानी । प्रकट अडार पाप ॥  
 जे में कीया नो महुनी , बगरा बगरा भाई बाप ॥ कृ० ॥ २७ ॥  
 मुक्त आधार छ पटनोनी । सरदइगा छे शुद्ध ॥ जिन उमे मोटो  
 जगतमें नी । निम मारर ने दुग्घ ॥ कृ० ॥ २८ ॥ षष्ठम दध नू  
 रानियोनी । शत्रुञ्जय मिणुगार ॥ पाप आलोचा आपणानी । कर  
 प्रभु मोरी सार ॥ कृ० ॥ २९ ॥ मर्म एह चिन उमेंनोनी । पाप  
 आलोचा जाय ॥ मनसुँ । मन्दासि दुग्घ नी ॥ दना दूर पुलाग  
 ॥ कृ० ॥ ३० ॥ तू गति तू मति तू धणीनी । नूँ माहिष तू नव ॥  
 आण धरु शिर ताहरीजी । भव भव ताहरी सेव ॥ कृ० ॥ ३१ ॥  
 फलरा ॥ इम बडिय सेनुञ्ज चरण मेगा नामिन ॥ चिन नगा ।  
 करजोडि आदि निणद आगे पाप आलोचा आपणा ॥ भीपूच  
 चिनबदसूरि सदगु प्रथम शिष्य सुनरा घरा । गणि सजलदद  
 मुशिष्य वाचरु "समयमुन्दर" गणि भणे ।

